विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बदकारियाँ ही हमारी उत्पीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

इस युद्ध का अंजाम क्या होगा?

अमेरिका – इजरायल और ईरान के बीच चल रहे महायुद्ध को 24 दिन पूरे हो चुके हैं और इसका कोई अंत फिलहाल दिखाई नहीं दे रहा है। इस युद्ध की शुरुआत 28 फरवरी, 2026 को इजरायल द्वारा ईरान पर मिसाइल हमले करने के साथ हुई। पहले ही दिन ईरान के एक स्कूल पर बमबारी से स्कूल में पढ़ने वाली लगभग डेढ़ सौ बालिकाएं मौत के मुंह में समा गईं। तब से अब तक अमेरिका एवं इजरायल द्वारा ईरान पर निरंतर बमबारी की जा रही है एवं उसके विभिन्न नागरिक और सैन्य ठिकानों को नष्ट कर दिया गया है। ईरान की सर्वोच्च लीडरशिप को एक के बाद एक कर मार दिया गया है।

इसके बावजूद, ईरान की ओर से इस हमले के उत्तर में दागी जा रही आधुनिकतम मिसाइलें रुकने का नाम नहीं ले रही हैं। ईरान ने इस युद्ध में आशातीत आत्मविश्वास और सैन्य क्षमता का परिचय दिया है।

पहले हम यह देख लें कि युद्ध को प्रारंभ करने के पीछे इजरायल और अमेरिका ने कारण क्या बताया? इजराइल और अमेरिका का यह मानना है कि ईरान न्यूक्लियर शक्ति बनने यानि परमाणु बम बनाने की दिशा में कार्य कर रहा था। इस संबंध में अमेरिका और ईरान के मध्य एक समझौता भी 25 फरवरी को लगभग हो चुका था, किंतु इसके तत्काल बाद 28 फरवरी को अमेरिका और इज़राइल ने ईरान पर संयुक्त रूप से हवाई हमला कर दिया। इसका कोई सबूत अमेरिका या इजरायल के पास नहीं था कि ईरान के पास यूरेनियम संवर्धन के माध्यम से परमाणु बम बनाने का कोई कार्यक्रम था। अमेरिका द्वारा ईरान के विभिन्न शहरों और उसके सैन्य ठिकानों पर गत 24 दिनों से निरंतर बमबारी की जा रही है। ईरान ने इसके विपरीत, विभिन्न अरब देशों में स्थित अमेरिका के सैन्य ठिकानों पर मिसाइल से हमले किए हैं, जिनसे अमेरिका को भारी नुकसान पहुंचा है। इजराइल के सुरक्षा कवच को तोड़ते हुए ईरान, इजरायल के कई क्षेत्रों में बमबारी कर भारी नुकसान पहुंचाने में सफल हुआ है। हाल ही में इंटरकॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल के द्वारा ईरान ने 4000 किलोमीटर दूर हिंद महासागर में स्थित दियागो गार्सिया में अमेरिका के सैन्य ठिकाने पर भी हमला किया है।

ईरान में अयातुल्लाह खमेनेई की हत्या के बाद उनके लड़के मुजतबा खमेनेई को सुप्रीम लीडर बनाया गया। ईरान के प्रमुख नेता लारीजानी को मार दिया गया। इसके अतिरिक्त भी कई सैन्य सलाहकार और नेताओं को अमेरिका ने विभिन्न हमलों के माध्यम से मार दिया।

ईरान द्वारा विभिन्न अरब देशों में स्थित अमेरिका के सैन्य ठिकानों पर लगातार बमबारी जारी है। उसने हॉर्मुज जलडमरूमध्य (स्ट्रेट) से निकलने वाले सभी तेल वाहक जहाजों पर प्रतिबंध लगा दिया है। अब धीरे–धीरे केवल उन जहाजों को छूट दी जा रही है जो अमेरिका और इजरायल के समर्थन में नहीं हैं। इन पर प्रति टैंकर 20 लाख डॉलर का शुल्क लगा दिया है। हॉर्मुज स्ट्रेट बंद किए जाने से पूरे विश्व में कच्चे तेल की समस्या उत्पन्न हो गई है क्योंकि विश्व के कुल तेल उत्पादन का 20 प्रतिशत इसी स्ट्रेट के माध्यम से जाता है। कच्चे तेल के दाम बहुत बढ़ने लगे हैं।

जहां तक भारत का प्रश्न है, कच्चा तेल इस युद्ध से पहले 70–75 डॉलर प्रति बैरल के हिसाब से मिल रहा था। इसकी कीमत अब लगभग 119 डॉलर प्रति बैरल हो चुकी है। भारत के कुछ तेल वाहक जहाज़ को अवश्य ईरान ने हॉर्मूज स्ट्रेट से निकलने की अनुमति दी है जिसके कारण भारत में पेट्रोल और गैस की व्यवस्था जैसे–तैसे हो पा रही है। कई स्थानों पर इसकी कालाबाजारी हो रही है और काला बाजार में एल पी जी गैस का सिलेंडर लगभग 4–5000 रुपए देकर खरीद रहे हैं। भारत सरकार ने अभी तक पेट्रोल के दाम में वृद्धि नहीं की है जबकि गैस के दाम बहुत पहले ही 60रू. प्रति सिलेंडर बढ़ा दिया गया था। पेट्रोल के दामों में सरकार ने वृद्धि को शायद बंगाल, तमिलनाडु, केरल सहित पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव तक के लिए रोक रखा है। जैसे ही यह चुनाव पूरे होंगे, इसकी पूरी संभावना है कि पेट्रोल के दाम बहुत बढ़ा दिए जाएँ।

इस युद्ध का एक विचित्र पहलू यह भी है कि अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप लगातार विरोधाभासी और ऊलजुलूल बयान देते रहे हैं। कभी वह कहते हैं कि युद्ध समाप्त हो चुका है और फिर लगातार हमले करने और ईरान को नष्ट करने की बात करते हैं। इस युद्ध के दौरान अंतरराष्ट्रीय कानून के सभी मापदंड ध्वस्त हो चुके हैं। केवल एक ही कहावत लागू हो रही है शुपू गें गुर्ल्द्दुः।

इस युद्ध में ईरान को रूस और चीन से अघोषित समर्थन मिल रहा है। अमेरिका का समर्थन तो नाटो के देशों ने भी करने से मना कर दिया है। अभी तक अमेरिका ने अपने सैनिकों को ईरान की धरती पर नहीं उतारा है। अमेरिका का यह मानना था कि केवल ईरान के शासको को समाप्त करके वहां सत्ता परिवर्तन कर देंगे और ऐसी सरकार को बिठा देंगे जो अमेरिका की पिछलग्गू की तरह काम करे ताकि इस क्षेत्र के तेल भंडारों पर अपना नियंत्रण स्थापित कर सके। ट्रंप का यह सपना, अभी तक केवल सपना ही बना हुआ है और इसके साकार होने के कोई आसार भी नजर भी नहीं आ रहे हैं।

> **इस युद्ध की शुरुआत 28 फरवरी, 2026 को इजरायल द्वारा ईरान पर मिसाइल हमले करने के साथ हुई। पहले ही दिन ईरान के एक स्कूल पर बमबारी से स्कूल में पढ़ने वाली लगभग डेढ़ सौ बालिकाएं मौत के मुंह में समा गईं। तब से अब तक अमेरिका एवं इजरायल द्वारा ईरान पर निरंतर बमबारी की जा रही है एवं उसके विभिन्न नागरिक और सैन्य ठिकानों को नष्ट कर दिया गया है। ईरान की सर्वोच्च लीडरशिप को एक के बाद एक कर मार दिया गया है।**

इस युद्ध का एक और अलग पहलू यह भी है कि मुस्लिम देश आपस में ही लड़ रहे हैं। अमेरिका के सैन्य ठिकाने संयुक्त अरब अमीरात, कतर, कुवैत, सऊदी अरब आदि स्थानों पर हैं, जहां ईरान बमबारी कर रहा है। इन हमलों से इन देशों की जन और धन हानि भी बहुत हुई। इस युद्ध ने विभिन्न मुस्लिम अरब देशों को, मुस्लिम देश ईरान के ही खिलाफ खड़ा कर दिया है। ईरान द्वारा लगातार अरब देशों को इस बात के लिए आगाह किया जा रहा है कि वे अमेरिका का समर्थन बंद करें और उसे, अपने सीमाओं में सैन्य ठिकाने संचालित करने की अनुमति नहीं दें। इसी दौरान इजरायल ने लेबनान पर भी भयंकर बमबारी करके वहां बहुत क्षति पहुंचाई है।

ऐसा लगने लगा है कि अमेरिका की जनता ट्रंप के इस प्रकार के अजीब व्यवहार के समर्थन में नहीं है। अमेरिकी सैनिकों की भी जान अब जाने लगी है और जब उनके शव लौटकर अमेरिका आए तो वहां के लोगों में बहुत गुस्सा देखा गया। वे पहले देख चुके हैं कि किस प्रकार अमेरिकी सैनिकों के बड़ी संख्या में जान गंवाने के बाद भी अमेरिका, इराक –अफगानिस्तान –यमन –सीरिया आदि देशों में कोई खास परिवर्तन नहीं कर पाया है। पूरे विश्व में अपना एकमात्र साम्राज्य स्थापित करने का सपना देखने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप धीरे–धीरे अपने देश की खराब होती आर्थिक स्थिति के कारण वहां के लोगों का भी विरोध झेल रहे हैं। इस युद्ध के विरोध में वहां के अनेक सीनेटर और अन्य जन प्रतिनिधि भी हैं। कई लोग इसे ट्रंप द्वारा एप्स्टीन फाइल से लोगों का ध्यान भटकाने के लिए छेड़ा गया युद्ध भी बता रहे हैं। स्वतंत्र विश्लेषकों को ऐसा लगता है कि ट्रंप ने इजरायल का साथ देते समय स्थिति का आकलन करने में बड़ी भूल की है।

इस युद्ध में अफवाहों का बाजार भी गर्म है। कौन सी खबर सही है या झूठ, यह पता ही नहीं लगता। कभी नेतन्याहू के मारे जाने की खबर फैलती है तो इजरायली मीडिया उनके वीडियो प्रसारित करता है। उसे लोग आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से बनाए गए वीडियो बता रहे हैं। अमेरिका का यह सोचना कि ईरान के लोग जो अयातुल्लाह खामैनी के कट्टर धार्मिक शासन के विरोध में थे, वे स्वयं सत्ता विरोध के लिए उतर आएंगे और सत्ता परिवर्तन कर देंगे, गलत साबित हुआ है। ईरान के लाखों लोगों ने अयातुल्लाह खमेनेई की अंतिम यात्रा में भाग लिया और अब जब लारीजानी को मारा गया तो उसके भी समर्थन में लाखों लोग उतर आए। ईरान में सैंकड़ों –हजारों लोग मारे जा चुके हैं। इसी प्रकार लेबनान में भी कई लोग मारे गए हैं।

जिस प्रकार से इंसानों द्वारा इंसानों की मौत दोनों तरफ हो रही है, उसे देखकर तो लगता है कि हम पाषाण काल में पहुंच गए हैं। इतनी बड़ी बर्बादी दोनों तरफ हो रही और इसका कोई परिणाम निकलने की संभावना नहीं है। तो, क्या यह युद्ध केवल हथियार निर्माता कंपनियों और देशों के लिए व्यवसाय का अवसर बनकर ही रह जाएगा? क्या दुनियाँ में मानवीय संवेदनाएं बिल्कुल समाप्त हो गई हैं? क्या पूरा विश्व इंसानों की इस प्रकार निर्मम हत्याओं के विरुद्ध में उठकर खड़ा नहीं हो सकता? कब तक बमबारी में दोनों तरफ लोग मारे जाते रहेंगे? इससे केवल उन कंपनियों को फायदा हो सकता है जो इस प्रकार नष्ट हुई बड़ी संपत्तियों के पुनर्निर्माण के लाखों करोड़ रुपए के आदेश प्राप्त करेंगे।

आज जो बच्चे अमेरिकी आक्रमण का शिकार हो रहे हैं और अपने परिजनों को खो कर अनाथ हो रहे हैं, वे किस प्रकार की मानसिकता से बड़े होंगे, इसका अनुमान लगाना भी कठिन है।

विनाश के बारे में जो अनुमान हैं, उससे कहीं अधिक नुकसान इस युद्ध से हो रहा है। पूरे विश्व में इससे बड़ी अस्थिरता और अनिश्चितता का वातावरण गया है। भारत पर भी इसका बहुत बड़ा दुष्प्रभाव शीघ्र ही पड़ने की संभावना है। भारत ने इजरायल–अमेरिका द्वारा किए गए आक्रमण के बावजूद, न तो अमेरिका को इसके लिए जिम्मेदार माना,न ही इजरायल की निंदा की। यह भी एक संयोग ही है कि इस 28 फरवरी को इजरायल द्वारा किए गए आक्रमण के ठीक दो दिन पूर्व भारत के प्रधानमंत्री मोदी, इजरायल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू के साथ गले मिल रहे थे।

कुल मिलाकर हम यही कह सकते हैं कि इजरायल–अमेरिका और ईरान के बीच हो रहे इस युद्ध का दुष्प्रभाव फिलहाल तो मध्य पूर्व और अरब देशों के द्वारा अनुभव किया जा रहा है, किंतु यदि चीन और रूस इसमें प्रत्यक्ष रूप से शामिल हो गए, तो यह विश्व युद्ध का आकार तत्काल ही ले लेगा। ईरान के पास यदि वास्तव में कहीं न्यूक्लियर क्षमता हुई और उसका उपयोग उसने कर लिया तो उसका कितना भयंकर दुष्परिणाम हो सकता है, इसका अंदाजा ही लगाया जा सकता है।

हम केवल आशा ही कर सकते हैं कि ऐसा नहीं होगा और इस बेमतलब, बेनतीजा युद्ध को शीघ्र ही दोनों पक्ष समाप्त करने की और अग्रसर होंगे। सब लोग आशा कर रहे हैं कि यह युद्ध शीघ्र समाप्त हो, विश्व में शांति स्थापित हो। युद्ध का अंजाम सदैव विनाश ही होता है और यह युद्ध भी इससे अलग नहीं है। प्रत्येक देश के शासक को सद्बुद्धि आए और वह मानवता का संहार करने से बचे, यही कामना हम कर सकते हैं।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

गौ संरक्षण से सशक्त ग्रामीण अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ता राजस्थान

जोराराम कुमावत

भारतीय परंपरा में 'गोधन' को केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि समृद्धि, पोषण और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की आधारशिला माना गया है। राजस्थान की सांस्कृतिक चेतना, ग्रामीण जीवन और कृषि व्यवस्था में गाय का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। कृषि और पशुपालन को साथ लेकर ग्रामीण विकास की नई रणनीति बनाई जा रही है। इस स्थिति में गौ संरक्षण, गौसंवर्धन और पशुधन प्रबंधन की नीति अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा प्रस्तावित 'गौ सेवा नीति–2026' इसी व्यापक सोच का परिणाम है। इसका उद्देश्य गौवंश के संरक्षण के साथ–साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाना है। देश के कुल पशुधन का लगभग 10.6 प्रतिशत और गौवंश का लगभग 8 प्रतिशत राजस्थान में है। कुल पशुधन की दृष्टि से उत्तरप्रदेश के बाद राजस्थान दूसरे स्थान पर है। बीसवीं पशुधन गणना 2019 के अनुसार प्रदेश में कुल पशुधन 5.68 करोड़ एवं गौवंश 1.39 करोड़ है।

पशुपालन प्रदेश के लाखों किसानों और पशुपालकों के लिए आय का महत्वपूर्ण स्त्रोत है। ऐसे में गौवंश के संरक्षण, पोषण और वैज्ञानिक प्रबंधन की दिशा में समर्पित नीति बनाना समय की आवश्यकता थी। प्रस्तावित गौ सेवा नीति–2026 का उद्देश्य गौवंश के संरक्षण के साथ उनके समुचित प्रबंधन और आर्थिक उपयोगिता को बढ़ाना है। इस नीति के माध्यम से गौशालाओं को मजबूत करना, निराश्रित गौवंश की देखभाल, पशुपालकों को प्रोत्साहन तथा गौ आधारित उत्पादों को बढ़ावा देने जैसे अनेक कदम उठाए जा रहे हैं।

राज्य सरकार द्वारा पंजीकृत गौशालाओं को आर्थिक सहायता प्रदान की जानी है। वर्तमान में बड़े पशुओं के लिए प्रतिदिन 50 रुपये और छोटे पशुओं के लिए 25 रुपये प्रतिदिन का अनुदान दिया जा रहा है। इससे हजारों गौशालाओं के संचालन को सहयोग मिला है और बड़ी संख्या में निराश्रित गौवंश को संरक्षण प्राप्त हुआ है।

गौ संरक्षण को सरकारी प्रयासों के साथ ही सामाजिक भागीदारी से ही सफल बनाया जा सकता है। भारतीय संस्कृति में सदियों से 'गौग्रास' की परंपरा रही है, जिसके अंतर्गत घर में भोजन बनने से पहले गाय के लिए अन्न का एक भाग अलग निकालने की परंपरा रही है। यह धार्मिक परंपरा होने के साथ ही सामाजिक संवेदना का प्रतीक है। इस परंपरा को पुनर्जीवित कर समाज के विभिन्न वर्गों को गौशालाओं तथा निराश्रित गौवंश की सेवा से जोड़ने से गौ संरक्षण का कार्य अधिक प्रभावी और स्थायी बन सकता है। राज्य सरकार भी समाज और गौसेवी संस्थाओं की सहभागिता से इस परंपरा को पुनर्जीवित करने की दिशा में प्रयास कर रही है।

गौ संरक्षण की स्थायी व्यवस्था के लिए चारागाहों का संरक्षण और विकास अत्यंत आवश्यक है। राजस्थान में मौजूद हजारों चारागाह क्षेत्र परंपरागत रूप से पशुधन के लिए चारे का मुख्य स्त्रोत रहे हैं। समय के साथ इन चारागाहों पर अतिक्रमण और उपेक्षा के कारण कई क्षेत्रों में चारे की समस्या उत्पन्न हो गई थी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार अब चारागाहों के संरक्षण और विकास को प्राथमिकता दे रही है। चारागाह भूमि पर चारा विकास कार्यक्रम, पौधारोपण, वर्षाजल संचयन, चराई प्रबंधन और स्थानीय समुदाय की भागीदारी के माध्यम से इन्हें पुनर्जीवित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। चारागाहों का वैज्ञानिक विकास करने से पशुधन के लिए प्राकृतिक चारे की उपलब्धता बढ़ेगी, पशुपालकों की लागत कम होगी और पशुओं का स्वास्थ्य बेहतर होगा। राजस्थान आज देश के प्रमुख दुग्ध उत्पादक राज्यों में शामिल है। राज्य में प्रतिवर्ष करीब 3 करोड़ टन के आसपास दूध उत्पादन होता है। इससे लाखों ग्रामीण परिवारों को नियमित आय प्राप्त होती है। राज्य की राठी, थारपारकर, गिर और नागौरी जैसी देशी नस्लें दुग्ध उत्पादन और पशुधन की गुणवत्ता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। राज्य में दुग्ध उत्पादन और पशु आहार का वार्षिक कारोबार 8 हजार करोड़ रुपये से बढ़कर लगभग 10 हजार करोड़ रुपये तक पहुँच गया है। यह वृद्धि राजस्थान के डेयरी क्षेत्र को राष्ट्रीय स्तर पर मजबूत बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

डेयरी क्षेत्र में हुई प्रगति का सबसे बड़ा संकेत यह है कि वार्षिक मुनाफे में 46 प्रतिशत की ऐतिहासिक वृद्धि दर्ज की गई है, जो पिछले 47 वर्षों में सबसे अधिक है। राज्य के 24 दुग्ध संघों में से पहले घाटे में चल रहे 15 संघ अब लाभ में आ चुके हैं। राज्य में दुग्ध प्रसंस्करण क्षमता भी तेजी से बढ़ाई जा रही है। यह क्षमता 48 लाख लीटर प्रतिदिन से बढ़ाकर 52 लाख लीटर प्रतिदिन की का चुकी है और वित्तीय वर्ष के अंत तक इसे 65 लाख लीटर प्रतिदिन तक पहुँचाने का लक्ष्य रखा गया है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए डेयरी सहकारिता को भी मजबूत किया गया है। पिछले एक वर्ष में 1,000 नई डेयरी सहकारी समितियों का गठन किया गया है, 2,000 दुग्ध संकलन केंद्र स्थापित किए गए हैं और 1 लाख से अधिक दुग्ध उत्पादक किसानों को सहकारी नेटवर्क से जोड़ा गया है। इससे किसानों को दूध का बेहतर मूल्य मिल रहा है और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़े हैं।

पशुपालकों को आर्थिक सुरक्षा और प्रोत्साहन देने के लिए राज्य सरकार विभिन्न योजनाएँ चला रही है। मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना पशुओं के बीमा की सुविधा प्रदान करती है। इससे आकस्मिक नुकसान की स्थिति में पशुपालकों को आर्थिक सहायता मिलती है। इसी प्रकार राजस्थान सहकारी गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना के माध्यम से पशुपालकों को कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। मुख्यमंत्री दुग्ध उत्पादक संबल योजना दूध उत्पादकों को आर्थिक प्रोत्साहन प्रदान कर रही है।

पशुधन आधारित अर्थव्यवस्था को पर्यावरणीय दृष्टि से सुदृढ़ बनाने के लिए राज्य सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में 10 हजार बायोगैस प्लांट स्थापित कर रही है। इससे गोबर का उपयोग स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन में होगा और जैविक खाद भी तैयार होगी, जो प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देगी।

राजस्थान की कृषि व्यवस्था में पशुपालन एक महत्वपूर्ण पूरक भूमिका निभाता है। राज्य सरकार ने किसानों के हित में कई कदम उठाए हैं। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि और मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के माध्यम से किसानों को प्रति वर्ष 9 हजार रुपये की सहायता दी जा रही है और अब तक करीब 11 हजार करोड़ रुपये किसानों के खातों में हस्तांतरित किए जा चुके हैं।

वित्त वर्ष 2026–27 के बजट में 1 लाख 19 हजार 408 करोड़ रुपये का कृषि बजट रखकर राज्य सरकार ने कृषि और पशुपालन दोनों क्षेत्रों को विकास की मुख्यधारा में रखने का स्पष्ट संकेत दिया है। किसानों की आय बढ़ाने के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने गेहूं की खरीद पर प्रति क्विंटल 150 रुपये बोनस देने की घोषणा की है। इसके परिणामस्वरूप किसानों को गेहूं का मूल्य 2 हजार 735 रुपये प्रति क्विंटल प्राप्त होगा।

गौ संरक्षण, गौग्रास की परंपरा, चारागाह विकास, डेयरी सहकारिता का विस्तार और पशुपालकों के लिए लागू योजनाएं मिलकर राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई मजबूती दे रही हैं। इन पहलों के प्रभावी क्रियान्वयन और समाज की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित कर राजस्थान पशुधन आधारित समृद्धि का एक आदर्श मॉडल बन सकता है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में उठाए गए इन कदमों से यह स्पष्ट है कि राजस्थान गौ संरक्षण की परंपरा को आगे बढ़ाने के साथ ही गोधन के माध्यम से आर्थिक सशक्तिकरण, किसान समृद्धि और सतत ग्रामीण विकास की नई दिशा तय कर रहा है।

–जोराराम कुमावत,
पशुपालन, डेयरी एवं गोपालन मंत्री

बालिका शिक्षा और साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए अद्भुत समर्पण

ब्रजेश सामरिया

शिक्षाविद् डॉ. अब्दुल रज्जाक ने दूरदराज के क्षेत्रों में बालिकाओं के स्कूल ड्रॉप आउट को रोकने में अहम भूमिका निभाई।

कुरान की पहली आयत का पहला शब्द इकरा है जिसका अर्थ पढ़ो है। यह आध्यात्मिक और दुनियावी ज्ञान के महत्व को प्रदर्शित करता है। अब 2011 की जनगणना के आंकड़ों पर नजर ड़ालें तो जहां राष्ट्रीय साक्षरता दर 72.98 है, वहीं मुस्लिम समुदाय में यह मात्र 68.54 प्रतिशत है। इससे भी खराब स्थिति यह है कि मुस्लिम महिलाओं में यह 52 प्रतिशत भी नहीं है। इसका कारण इस समाज द्वारा बालिका शिक्षा को उतना महत्व न देना या दे पाना, जल्द शादी और आर्थिक कारणों से निजी विद्यालयों तक तुलनात्मक रूप से कम पहुंच माना जा सकता है। इस लिहाज से मुस्लिम बालिका शिक्षा का महत्व अधिक बढ़ जाता है।

राजस्थान में केन्द्र और राज्य सरकार समाज के सभी वर्गों की बालिकाओं की शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण प्रसार के लिए निःशुल्क साईकिल, लैपटॉप, ट्रांसपोर्ट वाउचर, छात्रवृत्ति, पाठ्यपुस्तक उपलब्ध करवा रही है। इसके साथ ही निजी प्रयासों से भी तस्वीर बदली है। इसका परिणाम देखना है तो दौसा शहर के नागौरी, देशवाली, खटीकान, रैगर मौहल्लों का दौरा किया जा सकता है। गत 15 साल में यहां के विद्यालय सैंट हाफिज उच्च माध्यमिक विद्यालय से पढ़ी 200 से ज्यादा बालिकाओं जिसमें अधिकांश अल्पसंख्यक और एससी वर्ग की हैं, बीएड और बीपीएड डिठी ली और इसके बाद इनमें से ज्यादातर सरकारी और निजी विद्यालयों के माध्यम से शिक्षा की उस अलख को जगाए हुए है, जिससे उनका स्वयं का जीवन रोशन हुआ। इस मिशन की शुरूआत सूफी डॉ. अब्दुल रज्जाक शाह ने की।

डॉ. शाह शिक्षा विभाग में अपनी पूरे कॅरियर के दौरान शिक्षा से जुडे नवाचार करते रहे और 1998 में राज्य के शिक्षा विभाग के संयुक्त निदेशक के पद से सेवानिवृत होने के पश्चात भी उन्होंने अपना समय परिवार या किसी व्यवसाय को देने के बजाय बालिका शिक्षा को समर्पित कर दिया। उन्होंने केकड़ी में इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल और जूनिया में एकता शिक्षण संस्थान भी खोला। इन सभी शिक्षण संस्थानों की खासियत यह है कि फीस उन्हीं बच्चों से ली जाती है, जिसके परिवार देने में समर्थ हैं।

शाह अब्दुल रज्जाक एशियन डवलपमेंट बैंक से भी जुड़े और विकासशील देशों में विषम परिस्थितियों में शिक्षा विशेषकर बालिका शिक्षा के सम्बंध में उपयोगी सुझाव दिये जिससे बच्चियों का स्कूलों में ठहराव सुनिश्चित हो, ड्रॉप आउट न हो। इन्हें 1979 में शिक्षक दिवस पर राज्य स्तरीय सर्वोच्च शिक्षक सम्मान से नवाजा गया।

हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्मों में बड़ी संख्या में लोग उनसे जुड़े और बाद के दिनों में उन्होंने जूनिया में खानकाह स्थापित कर सूफी परम्परा को आगे बढाया। प्रतिवर्ष 4 से 7 जिल्काद को उनका उर्स मुबारक शानकाह शाह ए रज्जाक, जूनिया में मनाया जाता है। बालिका शिक्षा और साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए महत्वपूर्ण कार्य करने वाली प्रतिभाओं को इस उर्स के दौरान ही समारोह आयोजित कर सुदर्श अवार्ड से सम्मानित किया जाता है। उनकी बालिका शिक्षा और साम्प्रदायिक सद्भाव की विरासत को उनके पुत्र सूफी डॉ. अब्दुल लतीफ शाह रज्जाकी अन्ना मियां बखूबी निभा रहे हैं। वे शिक्षा विभाग में सहायक जिला परियोजना अधिकारी रहे, राज्य के ख्यातनाम अखबार में उप सम्पादक के रूप में सेवाएं दीं, अपने पिता द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थाओं में समाज के अन्तिम पायदान पर खड़े परिवारों के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दी। दुनियावी के साथ ही दीनी मामलों में भी अपने पिता के पदचिन्हों पर चलकर जूनिया स्थित खानकाह के सज्जादनशनीं की भूमिका निभा रहे हैं। देश को आज सबसे ज्यादा आवश्यकता शांति और विकास की है तथा सूफी परम्परा ने पिछले कम से कम 800 सालों में देश में शांति और साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए जो प्रयास किए, योगदान दिया, उससे डॉ. अब्दुल रज्जाक और डॉ. अब्दुल लतीफ जैसे प्रयासों का महत्व समझा जा सकता है।

–ब्रजेश सामरिया,
उप निदेशक, डीआईपीआर

नसीराबाद : बनेवडा गांव में स्कूल मार्ग पर जलभराव से बच्चों को परेशानी

- **समस्याओं को लेकर एक युवक अपनी दो बेटियों के साथ कलैक्ट्रेट के बाहर धरने पर बैठा**
- **गांव में रोडवेज बस सेवा शुरू कराने, स्कूल मार्ग पर पक्की सड़क निर्माण, पानी की टंकी बनवाने सहित पांच सूत्रीय मांगों को लेकर प्रयास जारी**

अजमेर, (कासं)। जिले की नसीराबाद तहसील क्षेत्र के बनवेडा गांव की मूलभूत समस्याओं को लेकर एक युवक अपनी दो बेटियों के साथ जिला कलैक्टर कार्यालय के बाहर धरने पर बैठ गया। युवक का आरोप है कि कई बार प्रशासन को ज्ञापन देने के बावजूद अब तक किसी भी समस्या का समाधान नहीं किया गया, जिससे ग्रामीणों में गहरा रोष है।

धरने पर बैठे जितेन्द्र सिंह बनेवडा ने बताया कि गांव में रोडवेज बस सेवा शुरू कराने, स्कूल मार्ग पर पक्की सड़क निर्माण, पेयजल के लिए पानी की टंकी बनवाने सहित पांच सूत्रीय मांगों को लेकर वह लंबे समय से प्रयास कर रहा है। इसके लिए पूर्व में जिला कलैक्टर को ज्ञापन भी सौंपा गया, लेकिन आज दिन तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। जितेन्द्र सिंह ने बताया कि जिस रास्ते से गांव के बच्चे स्कूल जाते हैं, वहां बरसात के दौरान पानी भर जाता है। इससे बच्चों को स्कूल पहुंचने में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। कई बार बच्चों को कीचड़ और पानी से होकर गुजरना पड़ता है, जिससे हादसे की आशंका भी बनी रहती है। अब बारिश का मौसम नजदीक होने के कारण ग्रामीणों की चिंता और बढ़ गई है।

ग्रामीणों का कहना है कि गांव में रोडवेज बस सेवा नहीं होने के कारण लोगों को शहर तक आने–जाने में काफी परेशानी होती है। निजी साधनों पर निर्भर रहना पड़ता है, जिससे समय और धन दोनों की बर्बादी होती है। मरीजों, बुजुर्गों और विद्यार्थियों को विशेष रूप से कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

धरने पर बैठे जितेन्द्र सिंह ने चेतावनी दी कि यदि जल्द ही उनकी मांगों पर कार्रवाई नहीं की गई तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा। ग्रामीणों ने भी प्रशासन से जल्द समाधान कर मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने की मांग की है।

राशिफल मंगलवार 24 मार्च, 2026

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2083, रोहिणी नक्षत्र सायं 7:05 तक, प्रीति योग प्रातः 09:07 तक, तैतिल करण प्रातः 4:08 तक, चन्द्रमा आज वृष राशि में संचार करेगा।

गृह स्थितिः सूर्य–मीन, चन्द्रमा–वृष, मंगल–कुम्भ, बुध–कुम्भ, गुरू–मिथुन, शुक्र–मीन, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

आज कुमार योग सायं 4:08 तक है। रवियोग सायं 7:05 से आरम्भ होगा। आज भद्रा दिन 1:50 से रात्रि 12:49 तक रहेगी। आज से दुर्गा पूजन (बंगाल में) आरम्भ होगा। आज जैन ओली आरम्भ होगी।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:32 से 11:03 तक, लाभ अमृत 11:03 से 2:04 तक, शुभ 3:35 से 5:05 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:31, सूर्यास्त 6:36

मेष

परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

वृष

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के कारण तनाव बना रहेगा। मन में असंतोष बना रहेगा।

कर्क

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

कन्या

नवीन कार्यों के संबंध में [illegible] आश्वासन/संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

तुला

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में परेशानी हो सकती है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

वृश्चिक

परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

परिवार में चल रही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

मकर

व्यावसायिक प्रयासों एवं आर्थिक मामलों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कुंभ

घर–परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।